बुन्देलखण्ड क्षेत्र में चना उत्पादन की उन्नत तकनीकी

कृषि कुंभ (अप्रैल, 2023), खण्ड 02 भाग 11, पृष्ठ संख्या 87–88

बुन्देलखण्ड क्षेत्र में चना उत्पादन की उन्नत तकनीकी

रवि कुमार, सौरभ कुमार एवं अंजू शुक्ला,
रिसर्च स्कॉलर, पादपरोग विज्ञान, चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर (उत्तरप्रदेश) 208002, भारत।
Email Id: rkm46327@gmail.com

परिचय

विश्व के कुल चना उत्पादन में भारत की लगभग 75 प्रतिशत हिस्सेदारी होने के कारण भारत विश्व में चना उत्पादन में अग्रजी देश हैं वर्ष 2018–19 में 9. 67 मिलियन हेक्टेयर भूमि पर चने की खेती की गई और 1043 कि0ग्रा0 प्रति हेक्टेयर उत्पादकता के साथ कुल 10. 09 मिलियन टन चने का उत्पादन हुआ था। देश के कुल दलहन उत्पादक में 43 प्रतिशत से अधिक की हिस्सेदारी केवल चने की है।

बुन्देलखण्ड क्षेत्र भारत के दो राज्यों उत्तर प्रदेश (बॉदा, चित्रकूट, महोबा, हमीरपुर, जालौन, झॉसी, ललितपुर) एवं मध्यप्रदेश (छतरपुर, पन्ना, दमोह, टीकमगाढ, सागर, दतिया) के भागों से मिलकर बना है। वर्तमान चना उत्पादन एंव क्षेत्रफल की दृष्टि से मध्यप्रदेश राज्य लगभग 40 प्रतिशत की भगीदारी के साथ देश में प्रथम स्थान पर है। भारत के इस केन्द्रीय भागों में पठार एवं पथरीली पहाडी है एवं मृदा मुख्य रूप से लाल,राकड,परवा,काली, मार एवं काबड है। मृदा में कार्बनिक पदार्थ एवं जल भराव क्षमता एवं नाइट्रोजन तथा फास्फोरस इत्यादि पदार्थो की कमी होने के कारण सभी फसलों एवं फसलों की सभी किस्मों के लिए उपयुक्त नही है। इस क्षेत्र में गर्मियो में अधिकतम तापमान 42–48 डिग्री सेन्टीग्रेट एवं सर्दियों का तापमान 6–8 डिग्री सेन्टीग्रेट होता है।

बुन्देलखण्ड क्षेत्र में फसल उत्पादन मुख्यता वर्षा आधारित है। शुष्क मौसम एवं सिचाई के संसाधनों की उपलब्धता तथा तकनीकी का आभाव होने के कारण क्षेत्र की फसल उत्पादकता काफी कम है। बुन्देलखण्ड में चने की उत्पादकता कम होने का मुख्य कारक विपरीत जलवायु, लवर्णीय मुदा, जौविक कारक जैसे हानिकारक कीट, बिमारियां एवं तकनीकी का आभाव है। अतः सही तरीके से प्रबन्धन करने से चने की उत्पादकता को इस क्षेत्र मे बढ़ाया जा सकता है।

बुन्देलखण्ड में लगभग 30.67 प्रतिशत चने का उत्पादन होता है। वर्ष 2018–19 में चने के अन्तर्गत कुल क्षेत्रफल 3.96 लाख हेक्टेयर, कुल चना उत्पादन 4.86 लाख हेक्टेयर है, कुल

चना 3.56 लाख टन एवं औसत उत्पादकता 1045 कि0ग्रा0 प्रति हक्टेयर है। बुन्देलखण्ड में दलहनी फसलों में चना उत्पादन का प्रथम स्थान है। इस क्षेत्र की जलवायु एवं मृदा की स्थिति को देखते हुए चना एक टिकाऊ फसल है जो कम लागत, बरानी शुष्क खेती, वातावरण की नाइट्रोजन को भूमि में स्थापित करने एवं मृदा की उपजाऊ क्षमता को बढ़ाने में अति महत्वपूर्ण स्थान रखती है। चने की जडो मे स्थित राइजोबियम जीवाणु वातावरण के नाइट्रोजन को मृदा में पहुचातें है जिसके कारण नाइट्रोजन उर्वरक की कम आवश्कता होती है। इसके दाने में 16–22 प्रतिशत प्रोटीन 50–60 प्रतिशत कार्बोहाईड्रेट्स और उसमें 7 प्रतिशत वसा की मात्रा पायी जाती है। इसलिए बुन्देलखण्ड में चने की फसल की खेती का महत्व एवं भविष्य में इसकी मांग को देखते हुए उन्नत प्रजातियों एवं तकनीकी की आवश्कता है।

बुन्देलखण्ड में चना असली (4:1) एवं चना सरसों (4:1) अतः फसल पद्धति है। इसके अतिरिक्त सरसों या जों के साथ मिश्रित फसल के रूप में भी चने की खेती बुन्देलखण्ड में काफी प्रचलित है।

चने की बोई जाने वाली प्रमुख प्रजातियां निम्नवत है

जवाहर जी १६ , जे0 एन0 के0 वी0 २००१, के ८५०, राधे, आई0 सी0 सी0 वी0 १५१०६, आई0 सी0 सी0 वी0 10102 इत्यादि।

चने की फसल पर सैकड़ो रोग कारक संक्रमण करके अनुकूल वातावरण होने पर चने की फसल को पूर्णतयः नष्ट कर सकते है। जिसमें मुख्यतः कालर रॉट, वेस्कुलर विल्ट उकटा रोग एवं शुष्क जड़ ग्लानी रोग मुख्य बीमारियॉ है।

इन रोगों के रोक थाम के लिए समय से बुआई करे और फफूदीनाशक जैसे– कार्बेडाजिम 50 प्रतिशत के दो ग्रा0 प्रति कि0ग्रा0 बीज की दर से बीज उपचार करे या ट्राईकोडर्मा @ 4 ग्राम प्रति कि0ग्राम बीज से भी बीज उपचार अच्छे परिणाम देता है।

बुन्देलखण्ड क्षेत्र में चना की खेती में प्रमुख कीट के रूप में चना फली भेदक (हेलिकोवर्पा आर्मिजेरा) , का प्रकोप अधिक दिखाई दता हैं इसके प्रबन्धन के लिये गार्मियों में गहरी जुताई करनी चाहिये जल्दी पकने वाली किस्मों का चयन करे या 0.75 मि0ली0 1ली0 पानी इमामेक्टिन बेन्जोएट 25 डब्लू0जी0 0.4 ग्राम 1 ली0 पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।

चने का भण्डारण करने से पहले बिन के साफ कर ले 2–3 दिन धूप में रखना चाहिये तथा भण्डारण करने से पहले गोदाम को 0.5 प्रतिशत मेलाथियान के छिड़काव से सुवासित करे।